ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

पूरब खिले पलाश : रवीन्द्रनाथ त्यागी

Amit pal

Research Scholar

Prof. Sudha singh

Associate professor

Mahatma Jyotiba Phule Ruhelkhand University, Bareilly

मनुष्य और समाज के अनुभवों के संग्रह का नाम ही साहित्य होता है, ना कि शब्दों के खेल को साहित्य के नाम से जाना जाता है। साहित्य हमें सोचने समझने की शक्ति प्रदान करता है और हमारे आत्मशोध का माध्यम बनता है। हर काल में साहित्य ने जन- जीवन की सच्चाइयों को भिन्न-भिन्न रूपों में सामने रखा है। हिन्दी साहित्य ने तो विशेष रूप से समाज कि नब्ज पकड़ी है और साधारण मनुष्यों कि कहानियों में असाधारण सच्चाइयाँ ढूंढ निकाली हैं।

इसी धारा में रवीन्द्रनाथ त्यागी का व्यंग्य संकलन "पूरब खिले पलाश" एक मील का पत्थर साबित हुआ है। यह पुस्तक आज़ादी के पश्चात भारतीय समाज में लोगों के बीच आज़ादी से मोहभंग की व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति है। पुस्तक में भारतीय समाज के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तथा धार्मिक जीवन पर व्यंग्य किया गया है। लेखक ने अपने व्यंग्य लेखन से सर्वश्रेष्ठ 100 व्यंग्यात्मक लेखों का संकलन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

पुस्तक का शीर्षक "पूरब खिले पलाश" प्रतीकात्मक है। जहां पलाश फूल का लाल रंग क्रांति का प्रतीक है। लेखक अपने व्यंग्यों के द्वारा समाज में एक सामाजिक क्रांति लाना चाहता है। सदियों से सोयी हुई जनता को जगाना चाहता है ताकि वह अपने शोषण को पहचान सके और शोषण के विरुद्ध खड़ी हो सके।

व्यंग्य लेखकों में रवीन्द्रनाथ त्यागी का नाम शरद जोशी, हरिशंकर परसाई,श्रीलाल शुक्ल आदि के साथ बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी का जन्म बिजनौर जिले की नहटौर तहसील में 1930 ईस्वी में हुआ था। अपने शुरुआती दिनों में उन्हें बहुत ही विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। विषम परिस्थितियों ने ही रवीन्द्रनाथ त्यागी को ग्रामीण जीवन,छात्र जीवन, लालफ़ीता शाही को करीब से देखने का मौका मिला। वे मुख्य रूप से ग्रामीण परिवेश, वहाँ की सामाजिक आर्थिक विषमताओं और छोटी-छोटी खुशियों को अपनी लेखनी से जीवंत करते रहे हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी कि लेखनी में संवेदनशीलटा के साथ साथ यथार्थ का धरातल भी है। इससे पहले भी लेखक की बहुत सी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं, जिन्हें पाठक वर्ग एवं प्रबुद्ध वर्ग का अपार प्रेम मिला है।

व्यंग्य एक ऐसी विधा है जो पाठक वर्ग को गुदगुदाते हुये जीवन कि अटल गहराइयों मे ले जाकर सोचने पर मजबूर करती है। पाठक को झकझोरकर जगाने का प्रयत्न करती है। व्यंग्य विधा को हिन्दी साहित्य मे अवतरित हुये ज्यादा समय नहीं हुआ है। किन्तु अपने छोटे से जीवन काल में ही यह विधा पाठक वर्ग के दिलो- दिमाग में अपनी गहरी छाप छोड़ चुकी है। अपनी पुस्तक "पूरब खिले पलाश" रवीन्द्रनाथ त्यागी ने व्यंग्य के शसक्त माध्यम को जनता तक अपनी बात पाहुचने के लिए चुना है। डॉ.धनंजय वर्मा व्यंग्य के विषय में अपने विचार कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं,"व्यंग्य

किसी भाषा की ज़िंदादिली और जीवंतता का प्रतीक है। मगर हिन्दी में लोग उसके पहले हमेशा हास्य का उपसर्ग लगाने के आदी रहे हैं और हास्य भी हिन्दी में उन्मुक्त नहीं है, दुर्लभ है। हँसी-मज़ाक के नाम पर या तो उसमें फूहड़ टांगखींचवाद या टोपीउछालवाद होता है।"(1) पूरब खिले पलाश पुस्तक में भी लेखक ने व्यंग्यात्मक ढंग से गाँव से पलायन करते लोगों को अपना निशाना बनाया है। लेखक पुस्तक के दूसरे ही पाठ जिसका नाम "सखी, वसंत आ गया" में नव शिक्षित युवती के विवाह कर गाँव छोड़ कर जाने को लेकर व्यंग्य करते हुये लिखते हैं,"वसंत और वासंती बयार - ये चीजें मेरे लिए सहेजकर वह अपना मन अब सीमेंट,रेत,लोहे कि छड़ें और सड़क कूटने के इंजन से बहलाएगी।"(2) रवीन्द्रनाथ त्यागी

ने प्राचीन भारतीय साहित्य से लेकर नवीन साहित्य सब पर अपनी कलाम से मार्मिक प्रसंगों को छेड़ा है।

अपने एक लेख ‘‘लेखक आयोग की नियुक्ति :एक ऑफिस नोट” में रवीन्द्रनाथ त्यागी ने लेखक वर्ग की चुनौतियों का ब्योरा कुछ इस प्रकार दिया है “आयोग साहित्य की सारी समस्याओं का पूरा अध्ययन करेगा, लेखकों और कवियों के पूरे बयान लेगा, प्रश्नावली तैयार करेगा और जरूरी हुआ तो विदेश यात्रा भी करेगा।”[(3)]

रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपने इस व्यंग्य संकलन में जाति-प्रथा, धार्मिक अंधविश्वासों,हिन्दी दिवस,शिक्षण संस्थानों मे फैले भ्रष्टाचार आदि सभी को अपनी तीव्र लेखनी से संगयान में लिया। हिन्दी दिवस नाम के व्यंग्य लेख में लेखक ने हिन्दी की दुर्गति पर हिन्दी भाषी लोग कितने ज़िम्मेवार हैं, इस बात को बहुत ही सटीक तरीके से प्रस्तुत किया है। यहाँ उनके लेख की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं- “शहीद दिवस की भांति शायद हिन्दी दिवस भी उसी दिन मनाया जाता है,जिस दिन उसकी मृत्यु हुई थी। जिस प्रकार किसी बड़े व्यक्ति के निधन पर एक सप्ताह तक शोक मनाया जाता है,उसी प्रकार कुछ संस्थान एसे भी हैं जो हिन्दी दिवस के स्थान पर हिन्दी सप्ताह का आयोजन करते हैं।”[(4)]

किसी भी साहित्य को समाज में प्रतिष्ठा दिलाने का कार्य भाषा करती है। किसी भी रचना में प्रवृत्त होने से पहले लेखक अपनी रचना की भाषा का चुनाव करता है। भाषा को चुनने से पहले इस बात का ध्यान रखना होता है कि रचना समाज के किस वर्ग के लिए लिखा जा रहा है। रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपने व्यंग्य संकलन में ग्रामीण मुहावरों से लेकर शिक्षण संस्थाओं की शब्दावली तक का प्रयोग किया है। लेखक ने अपने कई व्यंग्य लेखों में ऐसे प्रसंग उठाए हैं कि उनका बिम्ब आँखों के आगे नाचने लगता है। लेखक की शैली सरलता और गहराई का सुंदर संगम है। व्यंग्य ने और हास्य ने लेखक की शैली को और अधिक आनंदमय बना दिया है।

यह पुस्तक केवल हास्य का पुट लिए हुये नहीं है, अपितु समाज का ज्वलंत दस्तावेज़ भी है। पुस्तक में परंपरा एवं आधुनिकता का समावेश भी है। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखे गए लेखों में परम्पराओं से जुड़े प्रसंग तो हैं ही, साथ ही आधुनिकता के आगमन का भी पता चलता है। शिक्षा के महत्व से संबन्धित लेखों में लेखक ने तत्कालीन विश्वविद्यालयी संघर्षों जगह दी है। अपने ऐसे ही एक लेक "शिक्षा संस्थानों के लिए एक नया कानून" में लेखक लिखते हैं, 'शिक्षा-संस्थानों को लेकर समाचार पत्रों में काफी समाचार और काफी पत्र छापे जा रहे हैं। कभी किसी राज्य में दी गयी उपाधियाँ वापस ली जा रही है तो कहीं लड़का लोग राजकीय बसों की ही मदद से अश्वमेध यज्ञ करने में संलग्न हैं।" (5)

तत्कालीन भारतीय समाज में गरीब और अमीर की खाई अत्यंत ही गंभीर रूप में प्रकट होती है। अमीरी और गरीबी के बीच की इस खाई को दर्शाने में भी लेखक ने विशेष रुचि दिखाई है। अपने लेख "गरीब होने के फायदे" में लेखक ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि किस प्रकार गरीब व्यक्ति अपने अभावों के बावजूद भी जीवन को पूर्ण रूप से जीने के लिए उत्साहित है। लेखक का वक्तव्य है कि "अमीर आदमी चन्दन की चीता पर जलता है तो गरीब आदमी लकड़ी के महंगा होने के कारण आजकल नदी में बहा दिया जाता है,जिसे कुछ विशेषज्ञ जल-समाधि के नाम से पुकारते हैं। गरीब आदमी सादा जीवन जीता है और ऊंचे विचार रखता है जबकि अमीर आदमी ऊंचा जीवन जीता है और सादा विचार से ही काम चलाता है।" (6)

पूरब खिले पलाश एक ऐसी कृति है जो लेखक के धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विचारों की वाहक है। लेखक की पैनी व्यंग्य दृष्टि समाज में फैले अंधविश्वासों एवं अनाचारों को सफलता के साथ प्रस्तुत करती हुई। इन अंधविश्वासों से बचने के रास्ते भी सूझाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 7,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018
2. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 19,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018
3. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 60,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018
4. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 79,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018
5. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 325,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018
6. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ० 393,भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण-2018